International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 924-925

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 924-925
www.allresearchjournal.com
Received: 23-11-2016
Accepted: 29-12-2016

डॉ. मो० शाहिद अख्तर
+2 मुकुन्द्री चौधरी हाई स्कूल, कादिराबाद, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मो० शाहिद अख्तर
+2 मुकुन्द्री चौधरी हाई स्कूल, कादिराबाद, दरभंगा, बिहार, भारत

भारत की विदेश नीतिः निरन्तरता और बदलाव

डॉ. मो० शाहिद अख्तर

सारांश
आज विश्व के सभी राज्य एक दूसरे से भौगोलिक दूरी पर स्थित होते हुए भी संचार के आधुनिक साधनों से निकट आ गए है। विश्व के किसी भी भाग में घटने वाली घटना दुसरे राष्ट्रों पर आवश्यक रूप से प्रभाव डालती है, विश्व के सभी देश किसी–न–किसी कारण से एक दूसरे पर आश्रित हैं, यही कारण है कि वर्त्तमान में विश्व राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास तथा निर्माण को बहुतमहत्व दिया जाता है अपने विदेश सम्बन्धों को अपनी इच्छानुसार संचालित करने के लिए एक श्रेष्ट विदेश नीति की आवश्यकता होती है।

प्रस्तावना
भारत की विदेश नीति के मुख्य सिद्धान्तों को स्पष्ट करते हुए 29 सितम्बर, 1946 को पं० नेहरू ने एक प्रेस कांप्रेंस में कहा था कि ''भारत का दृष्टिकोण संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति पूर्णतया सहयोग का है तथा जो चार्टर उसे संचालित करता है उसका अक्षरशः बिना किसी पूर्वाग्रह के पालन करने का है, भारत सभी उपनिवेशिक तथा पराधीन लोगों की स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्णय के अधिकार का पूर्ण समर्थन करता है।''
''विदेशी मामलों के क्षेत्रा में भारत की स्वतंत्र नीति यह होगी–एक दूसरे के विरूद्ध इकटठे हुए गुटों की शक्ति राजनिति से दूर रहना पराधीन व्यक्तियों की स्वतंत्रता के सिद्धान्त को मानना तथा जहाँ कहीं भी नस्ली भेदभाव होगा उसका विरोध करना शान्तिप्रिय देशों के साथ मिलकर, एक राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के शोषण के बिना अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा सदभावना के लिए कार्य करेगा।
भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्त को निम्न रूप में देख सकते हैंः– गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है जिस समय अमरीका और सोवियत संघ ये दोनों महाशिक्तियाँ शीत युद्ध की नीति पर चल रहीं थी तथा दोनों देश अपनी–अपनी स्थितियों को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न देशों के साथ गठजोड़ कर रहे थे, तब भारतीय नीति निर्माताओं, विशेषतया पं० नेहरू ने विश्व शान्ति तथा भारतीय सुरक्षा तथा आवश्यकताओं के हित में यह फैसला लिया कि भारत को इस शक्ति राजनीति से अलग ही रखा जाए, पहले इस नीति को तटस्थता की नीति कहा गया, परन्तु पाँचवें दशक में इसे गुट निरपेक्षता के नाम से जाना गया इसका अर्थ है दोनों महाशिक्तियों में से किसी के नाम भी देश को किसी सन्धि द्वारा न जोड़ना तथा न ही अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध से कटकर रहने का सिद्धांत है।
सकारात्मक रूप से गुटनिरपेक्षता का तात्पर्य है– एक स्वतंत्र विदेश नीति, अन्तराष्ट्रिय सम्बन्धों मे सक्रिय योगदान, प्रत्येक मामले को उसके गुण–दोषों के आधार पर जाँचना तथा भारत के राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय लेना, अर्थात जो सही और न्यायसंगत है उसकी सहायता और समर्थन करना तथा जो अनीतिपूर्ण एवं अन्यायसंगत है उसकी आलोचना एवं निन्दा करना, अमरीकी सीनेट में एक बार पं० नेहरू ने कहा था कि– ''यदि स्वतंत्रता का हनन होगा, न्याय की हत्या होगी अथवा कहीं आक्रमण होगा तो वहाँ हम न तो आज तटस्थ रह सकते हैं और न भविष्य में तटस्थ रहेंगें।''
साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद का विरोध भारत के विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त है, पं० नेहरू ने ब्रुसेल्स में एक सम्मेलन में कहा था कि ''साम्राज्यवाद के विरूद्ध भारत का संघर्ष मात्र एक राष्ट्रीय समस्या नहीं है, इसका सीधा प्रभाव कई राष्ट्रों पर पड़ता है, विश्व के किसी भी भाग में साम्राज्यवाद का अस्तित्व भारत को अस्वीकार है, भारत के लिए साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष जीवन–मृत्यु का प्रश्न है, समाम्राज्यवाद से परेशान सभी देशों, जैसे– इण्डोनेशिया, लीबिया, टयूनीशिया, अल्जीरिया, मोरक्को, अंगोला, नामीबिया में उपनिवेशीय शासन से छुटकारा पाने के लिए भारत ने भरपुर समर्थन दिया। भारत सैनिक गुटों–नाटों, सीटो, वारसा पैक्ट का विरोधी रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी भारत उपनिवेश्वाद के विरूद्ध आवाज उठा रहा है।
नस्लवादी भेदभाव का विरोध भी भारत के विदेश नीति का हिस्सा है। भारत सभी नस्लों की समानता में विश्वास रखता है। तथा किसी भी नस्ल के लोगों से भेदभाव का पूर्ण रूप से विरोध करता है,

भारत तथा अन्य गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के प्रयासों से श्री नेल्सन मण्डेला अपने 27 वर्षों के लम्बे काराबास के पश्चात 11 फरवरी 1990 को स्वतंत्रता को प्राप्त कर सक`अब जबकि दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने नस्लवाद की समाप्ति की ओर कदम उठाए हैं, तो भारत ने इसके विरूद्ध लागू सांस्कृतिक प्रतिबन्धों को हटाने की पहल की है, भारत ने जर्मनी की जातीवादी नीति का विरोध किया था। इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में नस्लवाद की पूर्ण समाप्ति भारतीय विदेश नीति का मुख्य सिद्धान्त है।

पंचशील और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व भी भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख सिद्धान्त है। इन पाँच सिद्धान्तों की व्याख्या 29 अप्रैल 1954 के भारत–चीन समझौते में विस्तार से की गई थी। यह समझौता भारत और चीन के तिब्बत क्षेत्र के बीच व्यापार संबंध सुनिश्चित करने के लिए किया गया था। ये पाँच सिद्धान्त निम्नलिखित है।

(1) एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना।
(2) एक–दूसरे के विरूद्ध आक्रमण न करना
(3) एक–दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना
(4) समानता और परस्पर मित्रता की भावना तथा
(5) शांतिपूर्ण सह–अस्तित्त्व

संसद में बोलते हुए नेहरू ने कहा था कि उनका यह विश्वास था कि यदि विभिन्न देश इन पाँच सिद्धान्तों के आधार पर अपने पारस्परिक संबंध निर्धारित करेंगें तो संसार की अनेक समस्याओं का आसानी से निदान हो सकेगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्व शान्ति के लिए समर्थन भारत के विदेश नीति का हिस्सा है। भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के मूल सदस्यों में से एक है। भारत ने सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लिया था तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर पर हस्ताक्षर किए थे, तब से लेकर आज तक भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ तथा दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के क्रिया कलापों का समर्थन किया है तथा इनमें सक्रियता से भाग लिया है।

तीसरे विश्व के साथ एकता भारतीय विदेश नीति का अहम हिस्सा है, तीसरे विश्व की शान्ति तथा विकास की अवधारणा बाद में जन्में नए स्वतंत्र तथा विकासशील राष्ट्रों की अवधारणा बन गई 7 सितम्बर, 1946 को पं० नेहरू ने अपने भाषण में कहा, ''हम एशिया में रहने वाले है तथा एशिया के लोग दूसरों की अपेक्षा अधिक निकट तथा निकटतम है,'' 1947 में नई दिल्ली में हुए एशिया सम्बन्ध सम्मेलन में उन्होने इण्डोनेशिया पर डच आक्रमण के विरूद्ध प्रस्ताव पास कराया। भारत ने साम्राज्यवाद के विरूद्ध आवाज उठाई तथा एशियाई देशों के मध्य सक्रिय सम्पर्कों की आवश्यकता पर बल दिया।

भारत की विदेश नीति का हिस्सा सभी के साथ शान्ति और मित्रता की भी है, भारत साम्यवादी और पूँजीवादी सभी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध रखना चाहता है, भारत ने पड़ोसी देशों के साथ भी मित्रता की नीति अपनाई है। भारत ने पाकिस्तान से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखने के लिए अनेक बार वार्ताए की समझौता एक्सप्रेस, लाहौर बस यात्रा, आगरा वार्ता (अटल बिहारी वाजपेयी ओर जनरल मुशर्रफ के मध्य) इसकी साक्षी है, नेपाल, बांग्लादेश तथा श्रीलंका जैसे छोटे राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में कभी भी हस्तक्षेप नहीं किया, बल्कि आर्थिक सहायता देकर उनकी आर्थिक व्यवस्था को स्थिर बनाने का प्रयास किया है।

भारत की विदेश नीति का हिस्सा निःशस्त्रीकरण का समर्थन करना भी है, भारत सभी प्रकार के शास्त्रों की होड़ रोकने का समर्थक है, इसके लिए जो शास्त्र बनाए जा रहें हैं वे न बनाए और जो बने हुए है उन्हें नष्ट कर दिया जाए। केवल निःशस्त्रीकरण ही अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को सुदृढ़ बना सकता है निःशस्त्रीकरण से बचाए गए धन और साधनों के उपयोग से सभी राष्ट्रों का विकास हो सकता हैं, भारत निःशस्त्रीकरण द्वारा शान्ति लाने के पक्ष में है।

परमाणु नीति के द्वारा भारत परमाणु शक्ति का युद्ध के लिए प्रयोग करने के विरूद्ध है, भारत–पाकिस्तान की परमाणु नीति, जो यूरोपियन अस्त्र नीति, जो यूरोपियन शस्त्र नीति का अनुसरण कर रही है, का विरोधी है, भारत अन्तरिक्ष के परमाणुकरण तथा इसके साथ–साथ अमरीका का विरोध रहा है, भारत परमाणु अप्रसार संधि का विरोधी है, क्योंकि वह पक्षपात पर आधारित है।

भारत ने अपने विदेश नीति में सार्क से सहयोग की नीति अपनाई दक्षिण एशियाई राज्यों के साथ भाई–चारे के सम्बन्धों का विकास करने के लिए भारत ने सार्क की स्थापना में सहयोग दिया है। सार्क में भारत, नेपाल, श्रीलंक, बाग्लादेश, पाकिस्तान, भूटान तथा मालदीव राज्य सम्मिलित है। अफगानिस्तान को भी सम्मिलित कर लिया गया है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि भारत की विदेश नीति स्पष्ट है हम स्वतंत्र विदेश नीति और एक प्रमुख गुटनिरपेक्ष देश के रूप में भारत के महत्व के अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में उसके लिए एक भूमिका तैयार करने की आवश्यकता के आकांक्षी है, हमें किसी भी सर्वोच्च शक्ति के साथ रणनीतिक भागीदारी या बाजार को खोलने के नाम पर आर्थिक, सामाजिक या सैन्य उपनिवेश बनने से बचना चाहिए, ये बातें अन्य चीजों के अलाबा हमारी विदेश नीति को भी पिछलग्गू बनाती है। वस्तुस्थिति से हमारी कोशिश हो कि हम सभी राष्ट्रों से अच्छे सम्बन्ध रखें और स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बहुध्रवीयता को प्रोत्साहन दें।

संदर्भ स्त्रोत

1. भारत की विदेश नीति – वी.एन.खन्ना एवं लिपाक्षी अरोड़ा
2. कोली, स०एम० प्रमुख देशां की विदेश नीतियाँ।
3. बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति (भाग–1) बी०पी० दत्त
4. भारत की विदेश नीति – डॉ० एस०सी० सिंहल
5. प्रतियोगिता दर्पण
6. दैनिक हिन्दुस्तान
7. भारत की विदेश नीति–पुष्पेश पतं
8. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध – डॉ० एस०सी० सिंहल
9. बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति (भाग–2) वी०पी० दत्त